आज बता दे दीप मुझे

श्रीमती अंजु चौधरी
वरिष्ठ शोध सहायक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की।

आज बता दे दीप मुझे मैं तुझसी बन जाऊँ कैसे
अन्तरतम में लेकर घोर तम, प्रकाश बन जाऊँ कैसे
तेरे मन की हर व्यथा धुम्र रूप में उड़ जाती है
तेरी जलती - लौ तेरे हृदय की व्याकुलता छिपाती है
निज जीवन देकर जग-जीवन का आनन्द बन जाऊँ कैसे
आज बता दे दीप मुझे मैं तुझसी बन जाँऊ कैसे

पल-पल तम को हरता जीवन तेरा जलता जाता
धन्य-धन्य है जीवन तेरा अविरल गति से चलता जाता
क्षण भंगुर है जीवन मेरा सफल इसे बनाऊँ कैसे
आज बता दे दीप मुझे मैं तुझसी बन जाँऊ कैसे

माटी से पाई देह तूने, चिन्गारी से पाई ज्योति
बड़े - बड़े तूफानों से लड़ती नन्ही सी है तेरी बाती
कर विष पान मैं शिव बन जाऊँ कैसे